ISSN : 2583-2948

संपादकीय

9 जून 2024 भारतीय जनता पार्टी के लिए ऐतिहासिक दिन था क्योंकि सरकार लगातार तीसरी बार सत्ता में आयी। अच्छा लगता है सुनकर कि एक लंबे अंतराल के पश्चात यह सरकार लगातार तीसरी बार अपनी सरकार बनाने में समर्थ रही, परंतु विचारणीय यह है कि तीसरी बार सत्ता में आई सरकार की यात्रा कितनी सहज रही और भविष्य कितना सुरक्षित है ? दो बार बहुमत मिलने के पश्चात इसी भ्रम में रहना कि इस बार भी प्रमुख नेता के चेहरे और नाम के आधार पर देश की जनता पालक पावड़े लगाकर बिछ जाएगी, यह बहुत बड़ी भूल थी। मौजूदा सरकार के दस वर्षों में – बेरोजगारी की समस्या, ज्येष्ठ की तपती दोपहरी में किसी फव्वारे के बौछार मात्र तक ही हल हो सकी। उस पर भी आरक्षण की मार। सरकार को समझना चाहिए कि सर्वाधिक 240 सीट जीतने के उपरांत भी सरकार न बना पाने का मलाल क्या होता है ? यही दुख अनारक्षित लोगों को भी होता है जब किसी परीक्षा में 200 में से 160 नम्बर मिलने के उपरांत भी परीक्षा या नौकरी के लिए चयन नहीं किया जाता जबकि उसी के विपरीत आरक्षित वर्ग मात्र 100 अंक पाकर भी पद का लाभ उठाते हैं।

विकास की बात सर्वत्र की जा रही है। नि: संदेह वर्तमान सरकार ने कई ऐतिहासिक मुद्दों पर विजय पायी है और देश को विकास की ओर सतत ही प्रेरित किया है बावजूद इसके, कुछ भयंकर कमियाँ भी हैं जिन पर कार्य करना अनिवार्य है अन्यथा आगामी चुनाव में विदाई का क्षण सुनिश्चित हो सकता है। एक शोधार्थी, अध्येता और प्राध्यापक होने के नाते मैंने यह पाया कि – सरकार को आरोप – प्रत्यारोप का सिलसिला बंद करना चाहिए, हर प्रश्न का जवाब दिये बिना विकास की ओर ध्यान देना चाहिए, अल्पसंख्यकों पर कटाक्ष करने से बचना चाहिए, युवाओं के भविष्य के हित में विशेष कार्य करना चाहिए, व्यापार – रोजगार के व्यापक अवसर प्रदान करने के पक्ष में सोचना चाहिए, योग्यता को प्राथमिकता देनी चाहिए, फ्री सब्सिडी को हटाना चाहिए क्योंकि ये लोगों को अकर्मण्य बनाने वाला है, चुनाव के लिए भी शिक्षित नेताओं को ही टिकट देनी चाहिए।

देश के विकास में सबकी सहभागिता आवश्यक है। यदि हम सब परस्पर वैमनस्यता और प्रतिस्पर्धा को भूलकर, एकजुट होकर अपने दायित्वों को लेकर प्रतिबद्ध रहें तो हमारे देश में असीम संभवनाएं हैं जिससे हम विश्वगुरु सहज ही बन सकते हैं।

डॉ अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी